आनंद साहिब

आध्यात्मिकता की ओर एक यात्रा

हिंदी अनुवाद

SikhBookClub.com

SGGSONLINE.COM

विषय-सूची

1. आनंद साहिब ---------- 1
2. अरदास-प्रार्थना ---------- 27
3. आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें ---------- 31
4. यात्रा का दर्शन ---------- 33
5. महिलाओं की भूमिका ---------- 35
6. पगड़ी का महत्व ---------- 38
7. आपकी यात्रा में विनम्रता का मूल सार ---------- 40

🙏🙏🙏We are distributing Free Gutkas, Divine message of the Guru globally in all the major languages, To Continue this Monumental task, please donate at https://sggsonline.com/donation

This Sewa has been done by Sewadars & SikhBookClub.

This text is only a translation and only gives the essence of the Guru's Divine word. For a more complete understanding, please read the Gurumukhi Sri Guru Granth Sahib Ji. If any errors are noticed, please notify us immediately via email at walnut@gmail.com.

Publisher
© Sikhbookclub.com
Chino, Ca 91710

ਰਾਮਕਲੀ ਮਹਲਾ ੩ ਅਨੰਦੁ
रामकली महला ३ अनंदु
राग रामकली, तृतीय गुरु, आनंद, परमानंद के गीत:

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਅਨੰਦੁ ਭਇਆ ਮੇਰੀ ਮਾਏ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮੈ ਪਾਇਆ ॥
अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥
हे मेरी माँ! मन में आनंद ही आनंद हो गया है, क्योंकि मैंने सतगुरु को पा लिया है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਤ ਪਾਇਆ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਮਨਿ ਵਜੀਆ ਵਾਧਾਈਆ ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥
सतगुरु से मिलने पर, मैं सहज शांति और संतुलन की स्थिति में हूँ, जैसे कि मेरे मन में एक आनंदमय राग बज रहा हो।

ਰਾਗ ਰਤਨ ਪਰਵਾਰ ਪਰੀਆ ਸਬਦ ਗਾਵਣ ਆਈਆ ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥
ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो रत्नों जैसी संगीतमय अमूल्य राग-रागनियाँ अपनी परियों जैसे परिवार सहित भगवान् की स्तुति गाने आई हों।

ਸਬਦੋ ਤ ਗਾਵਹੁ ਹਰੀ ਕੇਰਾ ਮਨਿ ਜਿਨੀ ਵਸਾਇਆ ॥
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥
जिन्होंने परमात्मा को मन में बसा लिया है, वे सभी उसकी स्तुति का यशोगान करो।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਅਨੰਦੁ ਹੋਆ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮੈ ਪਾਇਆ ॥੧॥
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥
नानक कहते हैं कि सतगुरु को पाकर मन में परमानन्द विकसित हो गया है। १॥

ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਤੂ ਸਦਾ ਰਹੁ ਹਰਿ ਨਾਲੇ ॥
ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥
हे मेरे मन ! तू सदा परमात्मा के साथ लीन रह,

ਹਰਿ ਨਾਲਿ ਰਹੁ ਤੂ ਮੰਨ ਮੇਰੇ ਦੂਖ ਸਭਿ ਵਿਸਾਰਣਾ ॥
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥
हे मन ! परमात्मा के साथ लीन रहेगा तो वह तेरे सभी दुःख भुला देंगे।

ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਓਹੁ ਕਰੇ ਤੇਰਾ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰਣਾ ॥
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥
वह सदा तुम्हारी सहायता करेंगे और तुम्हारे काम संपन्न करेंगे।

ਸਭਨਾ ਗਲਾ ਸਮਰਥੁ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੇ ॥
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥
जो स्वामी सभी बातें पूरी करने में समर्थ है, उसे क्यों मन से भुला रहे हो।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮੰਨ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਰਹੁ ਹਰਿ ਨਾਲੇ ॥੨॥
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥
नानक कहते हैं कि हे मेरे मन ! सदा परमात्मा के साथ आस्था बनाकर रहो ॥ २ ॥

ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬਾ ਕਿਆ ਨਾਹੀ ਘਰਿ ਤੇਰੈ ॥
साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥
हे सच्चे स्वामी! आपके घर में क्या कुछ नहीं है?

ਘਰਿ ਤ ਤੇਰੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਦੇਹਿ ਸੁ ਪਾਵਏ ॥
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥
आपके घर में तो सब कुछ है, परन्तु आप जिसे देते है, वही प्राप्त करता है।

ਸਦਾ ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹ ਤੇਰੀ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਾਵਏ ॥
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥
जो सदा आपके महिमागान करते हैं, उनके मन में आपके नाम का निवास हो जाता है।

ਨਾਮੁ ਜਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਵਾਜੇ ਸਬਦ ਘਨੇਰੇ ॥
नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥
जिनके मन में नाम आ बसता है, उनके हृदय में अनहद शब्द की ध्वनि गूंज उठती है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਚੇ ਸਾਹਿਬ ਕਿਆ ਨਾਹੀ ਘਰਿ ਤੇਰੈ ॥੩॥
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥
नानक कहते हैं कि हे सच्चे मालिक ! आपके घर में भला क्या कुछ नहीं है॥ ३॥

ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਆਧਾਰੋ ॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥
ईश्वर का सच्चा नाम ही मेरा आधार है।

ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਮੇਰਾ ਜਿਨਿ ਭੁਖਾ ਸਭਿ ਗਵਾਈਆ ॥
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
उसका सच्चा नाम ही मेरा आधार है, जिसने हर प्रकार की भूख को मिटा दिया है।

ਕਰਿ ਸਾਂਤਿ ਸੁਖ ਮਨਿ ਆਇ ਵਸਿਆ ਜਿਨਿ ਇਛਾ ਸਭਿ ਪੁਜਾਈਆ ॥
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥
जिस नाम ने मेरी सब कामनाएँ पूरी कर दी हैं, वह सुख शान्ति करके मेरे मन में आ बसा है।

ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਣੁ ਕੀਤਾ ਗੁਰੂ ਵਿਟਹੁ ਜਿਸ ਦੀਆ ਏਹਿ ਵਡਿਆਈਆ ॥
सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥
मैं उस गुरु पर सदा बलिहारी जाता हूँ, जिसने यह प्रतिष्ठाप्रदान की है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਸੰਤਹੁ ਸਬਦਿ ਧਰਹੁ ਪਿਆਰੋ ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥
नानक कहते हैं कि हे संतजनो, तनिक ध्यानपूर्वक सुनो; गुरु-शब्द से प्रेम करो।

ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਆਧਾਰੋ ॥੪॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥
प्रभु का सच्चा नाम ही मेरा जीवनाधार है।४ ॥

ਵਾਜੇ ਪੰਚ ਸਬਦ ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਸਭਾਗੈ ॥
वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥
उस भाग्यशाली हृदय-घर में रबाब, पखावज, ताल, धुंघरू एवं शंख-पाँच प्रकार की ध्वनियों वाले अनहद शब्द गूंजते हैं।

ਘਰਿ ਸਭਾਗੈ ਸਬਦ ਵਾਜੇ ਕਲਾ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਧਾਰੀਆ ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥
उस भाग्यवान हृदय-घर में पाँच शब्द बजते हैं, जिस घर में परमात्मा ने अपनी शक्ति रखी हुई है।

ਪੰਚ ਦੂਤ ਤੁਧੁ ਵਸਿ ਕੀਤੇ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਮਾਰਿਆ ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥
हे परमेश्वर ! आपके कामादिक पाँच दूतों को वशीभूत करके भयानक काल को भी मार दिया है।

ਧੁਰਿ ਕਰਮਿ ਪਾਇਆ ਤੁਧੁ ਜਿਨ ਕਉ ਸਿ ਨਾਮਿ ਹਰਿ ਕੈ ਲਾਗੇ ॥
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥
प्रभु के नाम में वही जीव लगे हैं, जिनकी किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसा लिखा है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਤਹ ਸੁਖੁ ਹੋਆ ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਅਨਹਦ ਵਾਜੇ ॥੫॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥
नानक कहते है की हृदय - घर में अनहद शब्द बज रहा है वंहा सुख उपलब्ध हो गया है ॥ ५ ॥

ਸਾਚੀ ਲਿਵੈ ਬਿਨੁ ਦੇਹ ਨਿਮਾਣੀ ॥
साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥
ईश्वर से सच्ची लगन के बिना यह देह तुच्छ है।

ਦੇਹ ਨਿਮਾਣੀ ਲਿਵੈ ਬਾਝਹੁ ਕਿਆ ਕਰੇ ਵੇਚਾਰੀਆ ॥
देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥
सच्ची लगन के बिना निसहायतुच्छ देह क्या कर सकती है ?

ਤੁਧੁ ਬਾਝੁ ਸਮਰਥ ਕੋਇ ਨਾਹੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਬਨਵਾਰੀਆ ॥
तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥
हे बनवारी ! आपके अतिरिक्त अन्य कोई समर्थवान् नहीं है, अपनी कृपा करो।

ਏਸ ਨਉ ਹੋਰੁ ਥਾਉ ਨਾਹੀ ਸਬਦਿ ਲਾਗਿ ਸਵਾਰੀਆ ॥
एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥
इस देह को अन्य कोई स्थान नहीं है, सिमरन में लगकर ही इसका उद्धारहो सकता है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਲਿਵੈ ਬਾਝਹੁ ਕਿਆ ਕਰੇ ਵੇਚਾਰੀਆ ॥੬॥
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥
नानक कहते हैं कि ईश्वर से लगन के बिना यह निसहाय देह क्या कर सकती है॥ ६ ॥

ਆਨੰਦੁ ਆਨੰਦੁ ਸਭੁ ਕੋ ਕਹੈ ਆਨੰਦੁ ਗੁਰੂ ਤੇ ਜਾਣਿਆ ॥
आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥
हर कोई आनंद, आनंद की बात कहता है किन्तु सच्चा आनंद गुरु से जान लिया है।

ਜਾਣਿਆ ਆਨੰਦੁ ਸਦਾ ਗੁਰ ਤੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ॥
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥
सच्चा आनंद गुरु से जान लिया है, जो सदा ही अपने प्रिय सेवकों पर कृपा करते हैं हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਿਲਵਿਖ ਕਟੇ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਸਾਰਿਆ ॥
करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥
गुरु कृपा करके सारे पाप नष्ट कर देता है और आँखों में ज्ञान का सुरमा डाल देते हैंदे है।

ਅੰਦਰਹੁ ਜਿਨ ਕਾ ਮੋਹੁ ਤੁਟਾ ਤਿਨ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਚੈ ਸਵਾਰਿਆ ॥
अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥
जिनका अन्तर्मन से मोह टूट गया है, सच्चे प्रभु ने शब्द द्वारा उनका जीवन सुन्दर बना दिया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਏਹੁ ਅਨੰਦੁ ਹੈ ਆਨੰਦੁ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਣਿਆ ॥੭॥
कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥
नानक कहते हैं कि यही सच्चा आनंद है, जिस आनंद का ज्ञान गुरु से प्राप्त किया है॥ ७॥

ਬਾਬਾ ਜਿਸੁ ਤੂ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵੈ ॥
बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥
हे भगवान्, यह आनंद केवल उसी को मिलता है जिसे आप देते हैं।

ਪਾਵੈ ਤ ਸੋ ਜਨੁ ਦੇਹਿ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਰਿ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਵੇਚਾਰਿਆ ॥
पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥
वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जिसे आप स्वयं देते हैं, कोई अन्य असहाय भला क्या कर सकता है।

ਇਕਿ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਫਿਰਹਿ ਦਹ ਦਿਸਿ ਇਕਿ ਨਾਮਿ ਲਾਗਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥
इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥
कोई भ्रम में भूला हुआ है और दसों दिशाओं में भटक रहा है लेकिन किसी ने नाम के संग लगकर अपना जीवन सफल कर लिया है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨੁ ਭਇਆ ਨਿਰਮਲੁ ਜਿਨਾ ਭਾਣਾ ਭਾਵਏ ॥
गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥
जिन्हें परमात्मा की इच्छा अच्छी लगी है, गुरु की कृपा से उनका मन निर्मल हो गया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਸੁ ਦੇਹਿ ਪਿਆਰੇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵਏ ॥੮॥
कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥
भक्त नानक कहते हैं कि जिसे प्यारे प्रभु देते हैं, वही व्यक्ति प्राप्त करता है॥ ८॥

ਆਵਹੁ ਸੰਤ ਪਿਆਰਿਹੋ ਅਕਥ ਕੀ ਕਰਹ ਕਹਾਣੀ ॥
आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥
हे प्यारे संतजनो ! आओ, हम मिलकर अकथनीय प्रभु की कथा कहानी करें।

ਕਰਹ ਕਹਾਣੀ ਅਕਥ ਕੇਰੀ ਕਿਤੁ ਦੁਆਰੈ ਪਾਈਐ ॥
करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥
हम अकथनीय परमात्मा की कथा करें और सोचे कि उसे किस विधि द्वारा प्राप्त किया जा

सकता है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਸਉਪਿ ਗੁਰ ਕਉ ਹੁਕਮਿ ਮੰਨਿਐ ਪਾਈਐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥
अपना तन, मन, धन सब कुछ गुरु को सौंपकर उसकी आज्ञा का पालन करके ही ईश्वर को पाया जा सकता है।

ਹੁਕਮੁ ਮੰਨਿਹੁ ਗੁਰੂ ਕੇਰਾ ਗਾਵਹੁ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ॥
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥
गुरु की आज्ञा का पालन करो और उसकी सच्ची वाणी गाओ।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਸੰਤਹੁ ਕਥਿਹੁ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥੯॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥
भक्त नानक कहते हैं कि हे संतजनो ! सुनो, परमेश्वर की अकथनीय कथा कथन करें ॥ ६॥

ਏ ਮਨ ਚੰਚਲਾ ਚਤੁਰਾਈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥
ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥
हे चंचल मन ! चतुराई से किसी ने भी ईश्वर को प्राप्त नहीं किया।

ਚਤੁਰਾਈ ਨ ਪਾਇਆ ਕਿਨੈ ਤੂ ਸੁਣਿ ਮੰਨ ਮੇਰਿਆ ॥
चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥
हे मेरे मन ! तू ध्यान से मेरी बात सुन, चतुराई से किसी ने भी ईश्वर को नहीं पाया।

ਏਹ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਜਿਨਿ ਏਤੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥
एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥
यह माया ऐसी मोहिनी है, जिसने जीवों को भ्रम में डालकर सत्य से भुलाया हुआ है।

ਮਾਇਆ ਤ ਮੋਹਣੀ ਤਿਨੈ ਕੀਤੀ ਜਿਨਿ ਠਗਉਲੀ ਪਾਈਆ ॥
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥
यह मोहिनी माया भी उस परमात्मा की ही पैदा की हुई है, जिसने मोह रूपी ठग-बूटी जीवों के मुंह में डाली हुई है।

ਕੁਰਬਾਣੁ ਕੀਤਾ ਤਿਸੈ ਵਿਟਹੁ ਜਿਨਿ ਮੋਹੁ ਮੀਠਾ ਲਾਇਆ ॥
कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥
मैं उस परमात्मा पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने (नाम का) मीठा मोह लगाया हुआ है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਚੰਚਲ ਚਤੁਰਾਈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧੦॥
कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥
भक्त नानक कहते हैं कि हे चंचल मन ! चतुराई से किसी ने भी परमात्मा को प्राप्त नहीं किया ॥ १० ॥

ਏ ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਤੂ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਮਾਲੇ ॥
ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥
हे प्यारे मन ! तू सदा सत्य का ध्यान कर।

ਏਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਤੂ ਜਿ ਦੇਖਦਾ ਚਲੈ ਨਾਹੀ ਤੇਰੈ ਨਾਲੇ ॥
एहु कुट्मबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥
यह परिवार जिसे तू देखता है, इसने तेरे साथ नहीं जाना।

ਸਾਥਿ ਤੇਰੈ ਚਲੈ ਨਾਹੀ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥
साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥
जिस परिवार ने तेरे साथ नहीं जाना, उसके साथ तू क्यों चित्त लगा रहा है।

ਐਸਾ ਕੰਮੁ ਮੂਲੇ ਨ ਕੀਚੈ ਜਿਤੁ ਅੰਤਿ ਪਛੋਤਾਈਐ ॥
ऐसा कमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥
ऐसा काम बिल्कुल नहीं करना चाहिए, जिससे अन्त में पछताना पड़े।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਾ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਿ ਤੂ ਹੋਵੈ ਤੇਰੈ ਨਾਲੇ ॥
सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥
तू सतगुरु का उपदेश सुन, यही तेरे साथ रहेगा।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਪਿਆਰੇ ਤੂ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਮਾਲੇ ॥੧੧॥
कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥
भक्त नानक कहते हैं कि हे प्यारे मन ! तू सदा सत्य का ध्यान किया कर ॥ ११ ॥

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰਾ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥
हे अगम्य, अगोचर परमेश्वर ! तेरा अन्त किसी ने भी प्राप्त नहीं किया।

ਅੰਤੋ ਨ ਪਾਇਆ ਕਿਨੈ ਤੇਰਾ ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਤੂ ਜਾਣਹੇ ॥
अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥
किसी ने भी तेरा अन्त नहीं पाया, तू स्वयं ही अपने आप को जानता है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਖੇਲੁ ਤੇਰਾ ਕਿਆ ਕੋ ਆਖਿ ਵਖਾਣਏ ॥
जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥
यह सभी जीव-जन्तु तेरा खेल (लीला) है, इस संदर्भ में कोई क्या कहकर वर्णन करे।

ਆਖਹਿ ਤ ਵੇਖਹਿ ਸਭੁ ਤੂਹੈ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥
आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥
जिसने यह जगत् पैदा किया है, तू ही सब में बोल रहा एवं देख रहा है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਤੂ ਸਦਾ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧੨॥
कहै नानकु तू सदा अगमु है तेरा अंतु न पाइआ ॥१२॥
भक्त नानक कहते हैं कि हे ईश्वर ! तू सदा अगम्य है, तेरा अन्त किसी ने भी नहीं पाया ॥ १२ ॥

ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਖੋਜਦੇ ਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥
सुरि नर मुनि जन अम्रितु खोजदे सु अम्रितु गुर ते पाइआ ॥
जिस अमृत को देवता, मनुष्य एवं मुनिजन भी खोजते हैं, वह अमृत मुझे गुरु से प्राप्त हुआ है।

ਪਾਇਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੀਨੀ ਸਚਾ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
पाइआ अम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥
गुरु की कृपा से मुझे अमृत प्राप्त हुआ है और परम-सत्य को मेरे मन में बसा दिया है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਉਪਾਏ ਇਕਿ ਵੇਖਿ ਪਰਸਣਿ ਆਇਆ ॥
जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥
हे ईश्वर ! सभी जीव-जन्तु आपने ही उत्पन्न किए हैं, पर कोई दुर्लभ ही गुरु के दर्शन एवं चरण-स्पर्श करने आया है।

ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਚੂਕਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਭਲਾ ਭਾਇਆ ॥
लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥
उसका लालच, लोभ एवं अहंकार दूर हो गया है और उसे सतगुरु ही भला लगा है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਤੁਠਾ ਤਿਨਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥੧੩॥
कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अम्रितु गुर ते पाइआ ॥१३॥
भक्त नानक कहते हैं कि जिस पर परमात्मा स्वयं प्रसन्न हो गए हैं, उसे गुरु से अमृत मिल गया है॥ १३॥

ਭਗਤਾ ਕੀ ਚਾਲ ਨਿਰਾਲੀ ॥
भगता की चाल निराली ॥
भक्तों का जीवन-आचरण दुनिया के अन्य लोगों से निराला होता है।

ਚਾਲਾ ਨਿਰਾਲੀ ਭਗਤਾਹ ਕੇਰੀ ਬਿਖਮ ਮਾਰਗਿ ਚਲਣਾ ॥
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥
भक्तों का जीवन-आचरण इसलिए निराला है, क्योंकि उन्होंने बड़े कठिन मार्ग पर चलना होता है।

ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਤਜਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬਹੁਤੁ ਨਾਹੀ ਬੋਲਣਾ ॥
लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥
वे लालच, लोभ, अहंकार एवं तृष्णा को त्याग कर अधिक नहीं बोलना चाहते।

ਖੰਨਿਅਹੁ ਤਿਖੀ ਵਾਲਹੁ ਨਿਕੀ ਏਤੁ ਮਾਰਗਿ ਜਾਣਾ ॥
खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥
उन्होंने इस मार्ग पर जाना होता है, जो तलवार की धार से भी तीक्ष्ण एवं बाल से भी छोटा होता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨੀ ਆਪੁ ਤਜਿਆ ਹਰਿ ਵਾਸਨਾ ਸਮਾਣੀ ॥
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥
गुरु की कृपा से जिन्होंने अहंकार को त्याग दिया है, उनकी विकारों के प्रति वासना परमात्मा में समा गई है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਚਾਲ ਭਗਤਾ ਜੁਗਹੁ ਜੁਗੁ ਨਿਰਾਲੀ ॥੧੪॥
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥
भक्त नानक कहते हैं कि भक्तों का जीवन-आचरण युगों-युगान्तरों से ही दुनिया के लोगों से निराला है॥ १४॥

ਜਿਉ ਤੂ ਚਲਾਇਹਿ ਤਿਵ ਚਲਹ ਸੁਆਮੀ ਹੋਰੁ ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ॥
जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥
हे स्वामी ! जैसे आप चलाते हैं, हम वैसे ही चलते हैं। मैं आपके गुणों को नहीं जानता।

ਜਿਵ ਤੂ ਚਲਾਇਹਿ ਤਿਵੈ ਚਲਹ ਜਿਨਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਵਹੇ ॥
जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥
हमें जिस मार्ग पर आप डालते है, उसी मार्ग पर हम आपकी इच्छानुसार ही चलते हैं ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਨ ਨਾਮਿ ਲਾਇਹਿ ਸਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਵਹੇ ॥
करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥
अपनी कृपा करके जिन्हें आप नाम-स्मरण में लगा देता है, वे सदा ही आपका ध्यान करते रहते हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਕਥਾ ਸੁਣਾਇਹਿ ਆਪਣੀ ਸਿ ਗੁਰਦੁਆਰੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੇ ॥
जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥
जिसे आप अपनी कथा सुनाते हैं, वे गुरु के द्वार पर सुख प्राप्त करते हैं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਚੇ ਸਾਹਿਬ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵਹੇ ॥੧੫॥
कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥
भक्त नानक कहते हैं कि हे सच्चे मालिक ! जैसे आपको स्वीकार होता है, वैसे ही जीवों को चलाते हैं। ॥ १५ ॥

ਏਹੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਬਦੁ ਸੁਹਾਵਾ ॥
एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥
यह सुन्दर शब्द ही ईश्वर का कीर्तिगान है।

ਸਬਦੋ ਸੁਹਾਵਾ ਸਦਾ ਸੋਹਿਲਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਣਾਇਆ ॥
सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥
सतगुरु ने सदा सुन्दर शब्द का कीर्तिगान सुनाया है।

ਏਹੁ ਤਿਨ ਕੈ ਮੰਨਿ ਵਸਿਆ ਜਿਨ ਧੁਰਹੁ ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ॥
एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥
यह उनके ही मन में आकर बसा है, जिनके भाग्य में आदि से ही लिखा हुआ आया है।

ਇਕਿ ਫਿਰਹਿ ਘਨੇਰੇ ਕਰਹਿ ਗਲਾ ਗਲੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥
इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥
कुछ व्यक्ति भटकते रहते हैं और बहुत बातें करते हैं, किन्तु बातों से किसी ने भी प्रभु को प्राप्त नहीं किया।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਬਦੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਣਾਇਆ ॥੧੬॥
कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥
भक्त नानक कहते हैं कि सतगुरु ने शब्द का ही कीर्तिगान सुनाया है॥ १६ ॥

ਪਵਿਤੁ ਹੋਏ ਸੇ ਜਨਾ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥
पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥
जिन्होंने परमात्मा का ध्यान किया है, वे पवित्र हो गए हैं।

ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਪਵਿਤੁ ਹੋਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥
हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥
परमात्मा का ध्यान करके वही पवित्र हुए हैं, जिन्होंने गुरुमुख बनकर ध्यान-मनन किया है।

ਪਵਿਤੁ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਕੁਟੰਬ ਸਹਿਤ ਸਿਉ ਪਵਿਤੁ ਸੰਗਤਿ ਸਬਾਈਆ ॥
पवितु माता पिता कुट्मब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥
वे अपने माता-पिता एवं परिवार सहित पवित्र हो गए हैं और उनकी संगति करने वाले भी पवित्र हो गए हैं।

ਕਹਦੇ ਪਵਿਤੁ ਸੁਣਦੇ ਪਵਿਤੁ ਸੇ ਪਵਿਤੁ ਜਿਨੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥
हरि-नाम को मुँह से जपने वाले एवं कानों से सुनने वाले पवित्र हो गए हैं और जिन्होंने मन में बसाया है, वे भी पवित्र पावन हो गए हैं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੇ ਪਵਿਤੁ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੧੭॥
कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥
भक्त नानक कहते हैं कि जिन्होंने गुरुमुख बनकर ईश्वर का ध्यान किया है, वे पवित्र हो गए हैं॥ १७॥

ਕਰਮੀ ਸਹਜੁ ਨ ਊਪਜੈ ਵਿਣੁ ਸਹਜੈ ਸਹਸਾ ਨ ਜਾਇ ॥
करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥
धर्म-कर्म करने से मन में सहज ज्ञान उत्पन्न नहीं होता और सहज ज्ञान के बिना मन की चिंता दूर नहीं होती।

ਨਹ ਜਾਇ ਸਹਸਾ ਕਿਤੈ ਸੰਜਮਿ ਰਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥
यह चिंता किसी भी साधन से मन से दूर नहीं होती और अनेक लोग कर्मकाण्ड कर-करके थक गए हैं।

ਸਹਸੈ ਜੀਉ ਮਲੀਣੁ ਹੈ ਕਿਤੁ ਸੰਜਮਿ ਧੋਤਾ ਜਾਏ ॥
सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥
यह अन्तर्मन संशय चिंता से मलिन हो गया है, इसे किस साधन द्वारा शुद्ध किया जाए।

ਮੰਨੁ ਧੋਵਹੁ ਸਬਦਿ ਲਾਗਹੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹਹੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥
मन को शुद्ध करने के लिए शब्द से लगन लगाओ और परमात्मा के साथ चित्त लगाओ।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜੁ ਉਪਜੈ ਇਹੁ ਸਹਸਾ ਇਵ ਜਾਇ ॥੧੮॥
कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥१८॥
भक्त नानक कहते हैं कि गुरु की कृपा से सहज-ज्ञान पैदा हो जाता है और इस प्रकार संशय-चिंता मन से दूर हो जाती है।॥ १८ ॥

ਜੀਅਹੁ ਮੈਲੇ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲ ॥
जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥
कोई मन से मैला है, परन्तु बाहर से निर्मल होने का दिखावा करता है।

ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲ ਜੀਅਹੁ ਤ ਮੈਲੇ ਤਿਨੀ ਜਨਮੁ ਜੂਐ ਹਾਰਿਆ ॥
बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥
जो बाहर से निर्मल होने का दिखावा करता है और मन से मैला होता है, उसने अपना जन्म जुए में हार दिया है।

ਏਹ ਤਿਸਨਾ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਲਗਾ ਮਰਣੁ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥
एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥
उसे तृष्णा का यह बहुत बड़ा रोग लगा हुआ है और उसने मृत्यु को अपने मन से भुला दिया है।

ਵੇਦਾ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਉਤਮੁ ਸੋ ਸੁਣਹਿ ਨਾਹੀ ਫਿਰਹਿ ਜਿਉ ਬੇਤਾਲਿਆ ॥
वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥
वेदों में नाम को सर्वोत्तम बताया गया है परन्तु यह लोग उसे सुनते ही नहीं और प्रेतों की तरह भटकते रहते हैं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਸਚੁ ਤਜਿਆ ਕੂੜੇ ਲਾਗੇ ਤਿਨੀ ਜਨਮੁ ਜੂਐ ਹਾਰਿਆ ॥੧੯॥
कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१९॥
भक्त नानक कहते हैं कि जिन्होंने सत्य को त्याग कर झूठ से मोह लगा लिया है, उन्होंने अपना अमूल्य जन्म जुए में हार दिया है॥ १६॥

ਜੀਅਹੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲ ॥
जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥
कुछ व्यक्ति दिल से भी निर्मल होते हैं और बाहर से भी निर्मल होते हैं।

ਬਾਹਰਹੁ ਤ ਨਿਰਮਲ ਜੀਅਹੁ ਨਿਰਮਲ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਕਰਣੀ ਕਮਾਣੀ ॥

बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥

ऐसे दिल से एवं बाहर से निर्मल व्यक्ति सतगुरु के उपदेशानुसार शुभ करनी की कमाई करते हैं।

ਕੂੜ ਕੀ ਸੋਇ ਪਹੁਚੈ ਨਾਹੀ ਮਨਸਾ ਸਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥

कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥

उन्हें झूठ स्पर्श भी नहीं करता और उनका मन सत्य में ही विलीन रहता है।

ਜਨਮੁ ਰਤਨੁ ਜਿਨੀ ਖਟਿਆ ਭਲੇ ਸੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥

जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥

वही व्यापारी उत्तम हैं, जिन्होंने रत्न जैसा अमूल्य जन्म का लाभ हासिल कर लिया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਮੰਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਰਹਹਿ ਗੁਰ ਨਾਲੇ ॥੨੦॥

कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥

भक्त नानक कहते हैं कि जिनका मन निर्मल है, वे सदा ही गुरु के साथ रहते हैं।॥ २०॥

ਜੇ ਕੋ ਸਿਖੁ ਗੁਰੂ ਸੇਤੀ ਸਨਮੁਖੁ ਹੋਵੈ ॥

जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥

यदि कोई शिष्य गुरु के सन्मुख हो जाए।

ਹੋਵੈ ਤ ਸਨਮੁਖੁ ਸਿਖੁ ਕੋਈ ਜੀਅਹੁ ਰਹੈ ਗੁਰ ਨਾਲੇ ॥

होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥

यदि कोई शिष्य गुरु के सन्मुख हो जाए तो वह दिल से भी गुरु के साथ बना रहता है।

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਧਿਆਏ ਅੰਤਰ ਆਤਮੈ ਸਮਾਲੇ ॥

गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥

वह हृदय में गुरु के चरणों का ध्यान करता रहता है और अन्तरात्मा में भी उसकी स्मृति में ही लीन रहता है।

ਆਪੁ ਛਡਿ ਸਦਾ ਰਹੈ ਪਰਣੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਏ ॥

आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥

वह अपने अहंकार को छोड़कर गुरु के सहारे रहता है और गुरु के बिना अन्य किसी को नहीं जानता।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਸੰਤਹੁ ਸੋ ਸਿਖੁ ਸਨਮੁਖੁ ਹੋਏ ॥੨੧॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥
भक्त नानक कहते हैं कि हे संतो ! ध्यानपूर्वक सुनो; वही शिष्य गुरु के सन्मुख होता है॥ २१॥

ਜੇ ਕੋ ਗੁਰ ਤੇ ਵੇਮੁਖੁ ਹੋਵੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਵੈ ॥
जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥
यदि कोई शिष्य गुरु से विमुख हो जाए तो सतगुरु के बिना उसे मुक्ति नहीं मिलती।

ਪਾਵੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਰ ਥੈ ਕੋਈ ਪੁਛਹੁ ਬਿਬੇਕੀਆ ਜਾਏ ॥
पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥
उसे किसी अन्य स्थान पर मुक्ति नहीं मिलती, चाहे इस संदर्भ में कोई जाकर विवेकवान महापुरुषों से पूछ लो।

ਅਨੇਕ ਜੂਨੀ ਭਰਮਿ ਆਵੈ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਏ ॥
अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥
चाहे वह अनेक योनियों में भटक कर पुनः मानव योनि में आ जाए, तो भी गुरु के बिना मुक्ति नहीं पा सकता।

ਫਿਰਿ ਮੁਕਤਿ ਪਾਏ ਲਾਗਿ ਚਰਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥
फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥
वह दोबारा गुरु-चरणों में लगकर तभी मुक्ति पाता है, जब सतगुरु उसे शब्द (उपदेश) सुनाते हैं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਵੀਚਾਰਿ ਦੇਖਹੁ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਏ ॥੨੨॥
कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥
भक्त नानक कहते हैं कि विचार करके देख लो, विमुख जीव सतगुरु के बिना मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता ॥ २२॥

ਆਵਹੁ ਸਿਖ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੇ ਪਿਆਰਿਹੋ ਗਾਵਹੁ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ॥
आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
हे गुरु के प्यारे शिष्यो ! आओ, सच्ची वाणी गाओ।

ਬਾਣੀ ਤ ਗਾਵਹੁ ਗੁਰੂ ਕੇਰੀ ਬਾਣੀਆ ਸਿਰਿ ਬਾਣੀ ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
केवल गुरु की ही वाणी का गान करो, जो सब वाणियों में सर्वोत्तम वाणी है।

ਜਿਨ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਹਿਰਦੈ ਤਿਨਾ ਸਮਾਣੀ ॥
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥
जिन पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि हो जाती है, यह वाणी उनके हृदय में समा जाती है।

ਪੀਵਹੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਦਾ ਰਹਹੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਜਪਿਹੁ ਸਾਰਿਗਪਾਣੀ ॥
पीवहु अम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥
नामामृत का पान करो; सदा परमात्मा के रंग में लीन रहो और सदैव प्रभु का नाम जपते रहो।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਦਾ ਗਾਵਹੁ ਏਹ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ॥੨੩॥
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥
भक्त नानक कहते हैं कि सदैव यह सच्ची वाणी गाते रहो॥ २३॥

ਸਤਿਗੁਰੂ ਬਿਨਾ ਹੋਰ ਕਚੀ ਹੈ ਬਾਣੀ ॥
सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥
सतगुरु के बिना अन्य वाणी कच्ची है, गुरु के मुखारविंद से उच्चरित वाणी ही सत्य है।

ਬਾਣੀ ਤ ਕਚੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਬਾਝਹੁ ਹੋਰ ਕਚੀ ਬਾਣੀ ॥
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥
गुरु के अतिरिक्त अन्य सब वाणी झूठी है।

ਕਹਦੇ ਕਚੇ ਸੁਣਦੇ ਕਚੇ ਕਚੀਂ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ॥
कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥
मिथ्या (कच्ची) वाणी को मुंह से जपने एवं सुनने वाले भी कच्चे अर्थात् झूठे हैं और झूठे मनुष्यों ने कहकर कच्ची वाणी ही उच्चारण की है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਤ ਕਰਹਿ ਰਸਨਾ ਕਹਿਆ ਕਛੂ ਨ ਜਾਣੀ ॥
हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥
ऐसे व्यक्ति अपनी रसना से नित्य हरि नाम बोलते रहते हैं लेकिन उस बारे कुछ भी ज्ञान नहीं जानते।

ਚਿਤੁ ਜਿਨ ਕਾ ਹਿਰਿ ਲਇਆ ਮਾਇਆ ਬੋਲਨਿ ਪਏ ਰਵਾਣੀ ॥
चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥
जिनका चित्त माया ने चुरा लिया है, वे व्यर्थ ही बोल रहे हैं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਬਾਝਹੁ ਹੋਰ ਕਚੀ ਬਾਣੀ ॥੨੪॥
कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥
भक्त नानक कहते हैं कि सतगुरु के मुखारविंद से उच्चरित वाणी ही सत्य है, अन्य सब वाणी

कच्ची अर्थात् मिथ्या है॥ २४॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਤੰਨੁ ਹੈ ਹੀਰੇ ਜਿਤੁ ਜੜਾਉ ॥
गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥
गुरु का शब्द अमूल्य रत्न है, जिसमें गुण रूपी बहुमूल्य हीरे जड़ित हैं।

ਸਬਦੁ ਰਤਨੁ ਜਿਤੁ ਮੰਨੁ ਲਾਗਾ ਏਹੁ ਹੋਆ ਸਮਾਉ ॥
सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥
शब्द रूपी अमूल्य रत्न में जिसका मन लग गया है, वह उसी में लीन हो गया है।

ਸਬਦ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਮਿਲਿਆ ਸਚੈ ਲਾਇਆ ਭਾਉ ॥
सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥
जिसका मन शब्द से मिल गया है, उसने सत्य से प्रेम लगा लिया है।

ਆਪੇ ਹੀਰਾ ਰਤਨੁ ਆਪੇ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥
आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥
परमात्मा स्वयं ही शब्द रूपी रत्न एवं स्वयं ही गुरु रूपी हीरा है, वह जिसे यह शब्द रूपी रत्न देता है, वही इस तथ्य को समझता है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਬਦੁ ਰਤਨੁ ਹੈ ਹੀਰਾ ਜਿਤੁ ਜੜਾਉ ॥੨੫॥
कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥
भक्त नानक कहते हैं कि गुरु-शब्द एक बहुमूल्य रत्न है, जिसमें गुण रूपी कीमती हीरे जड़ित हैं।॥ २५ ॥

ਸਿਵ ਸਕਤਿ ਆਪਿ ਉਪਾਇ ਕੈ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤਾਏ ॥
सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥
शिव शक्ति (चेतन एवं माया) को उत्पन्न करके ईश्वर स्वयं ही अपनी इच्छा चला रहा है।

ਹੁਕਮੁ ਵਰਤਾਏ ਆਪਿ ਵੇਖੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਸੈ ਬੁਝਾਏ ॥
हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥
अपनी आज्ञा को चलाकर, वे स्वयं मन और माया के बीच के खेल को देखते हैं; वे इस नाटक की समझ किसी दुर्लभ (विरले)गुरु भक्त को ही देते हैं।

ਤੋੜੇ ਬੰਧਨ ਹੋਵੈ ਮੁਕਤੁ ਸਬਦੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥
जिसके मन में शब्द का निवास हो जाता है, वह सब बन्धनों को तोड़कर मुक्त हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਵੈ ਏਕਸ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥
परमात्मा जिसे स्वयं बनाता है, वही गुरुमुख बनता है और वह एक परमेश्वर में ध्यान लगा लेता है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਆਪਿ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਹੁਕਮੁ ਬੁਝਾਏ ॥੨੬॥
कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥
भक्त नानक कहते हैं कि स्रष्टा स्वयं ही अपनी आज्ञा (हुक्म) की सूझ प्रदान करता है॥ २६॥

ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਪੁੰਨ ਪਾਪ ਬੀਚਾਰਦੇ ਤਤੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥
सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥
स्मृतियां एवं शास्त्र, पाप-पुण्य का विचार करते हैं परन्तु वे भी सार तत्व को नहीं जानते।

ਤਤੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ਗੁਰੂ ਬਾਝਹੁ ਤਤੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥
गुरु के बिना सार तत्व को नहीं जाना जाता, तत्व ज्ञान नहीं मिलता।

ਤਿਹੀ ਗੁਣੀ ਸੰਸਾਰੁ ਭ੍ਰਮਿ ਸੁਤਾ ਸੁਤਿਆ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥
तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥
त्रिगुणात्मक संसार अज्ञान की निद्रा में सोया हुआ है और अज्ञान की निद्रा में ही जीवन रूपी रात्रेि व्यतीत हो जाती है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੇ ਜਨ ਜਾਗੇ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਬੋਲਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥
गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अम्रित बाणी ॥
गुरु की कृपा से वही जीव अज्ञान की निद्रा से जागे हैं, जिनके मन में परमात्मा आ बसा है और वे अमृत-वाणी जपते रहते हैं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੋ ਤਤੁ ਪਾਏ ਜਿਸ ਨੋ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ਜਾਗਤ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥੨੭॥
कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥
भक्त नानक कहते हैं कि उसे ही तत्व ज्ञान प्राप्त होता है, जिसकी दिन रात परमात्मा में लगन लगी रहती है और उसकी जीवन-रात्रि जाग्रत रहते ही बीत जाती है। २७ ॥

ਮਾਤਾ ਕੇ ਉਦਰ ਮਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ਕਰੇ ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥
माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥
जो माता के उदर में भी पालन-पोषण करते हैं, उन्हें मन से क्यों भुलाएँ ?

ਮਨਹੁ ਕਿਉ ਵਿਸਾਰੀਐ ਏਵਡੁ ਦਾਤਾ ਜਿ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਆਹਾਰੁ ਪਹੁਚਾਵਏ ॥
मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥
वह इतने बड़े दाता है, उन्हें मन से कैसे भुलाया जा सकता है, जो गर्भाग्नि में हमें भोजन पहुँचाते हैं।

ਓਸ ਨੋ ਕਿਹੁ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੀ ਜਿਸ ਨਉ ਆਪਣੀ ਲਿਵ ਲਾਵਏ ॥
ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥
वह जिसे अपनी लगन में लगा लेता है, उसे कोई दु:ख-दर्द स्पर्श नहीं कर सकता।

ਆਪਣੀ ਲਿਵ ਆਪੇ ਲਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੀਐ ॥
आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥
सच तो यह है कि वह प्रभु स्वयं ही अपनी लगन में लगाते हैं और हमें गुरुमुख बनकर सदा ही उन्हें स्मरण करना चाहिए।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਏਵਡੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥੨੮॥
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥
भक्त नानक कहते हैं जो इतने बड़े दाता है, उसे मन से क्यों भुलाएँ ? ॥ २८ ॥

ਜੈਸੀ ਅਗਨਿ ਉਦਰ ਮਹਿ ਤੈਸੀ ਬਾਹਰਿ ਮਾਇਆ ॥
जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥
जैसी अग्नि माता के गर्भ में है, वैसी ही बाहर माया है।

ਮਾਇਆ ਅਗਨਿ ਸਭ ਇਕੋ ਜੇਹੀ ਕਰਤੈ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥
माया एवं गर्भ की अग्नि दोनों एक समान ही (दु:खदायक) हैं, ईश्वर ने यह एक लीला रची हुई है।

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾ ਜੰਮਿਆ ਪਰਵਾਰਿ ਭਲਾ ਭਾਇਆ ॥
जा तिसु भाणा ता जमिआ परवारि भला भाइआ ॥
जब ईश्वरेच्छा हुई तो ही शिशु का जन्म हुआ, जिससे पूरे परिवार में आनन्द का वातावरण बन गया।

ਲਿਵ ਛੁੜਕੀ ਲਗੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਾਇਆ ਅਮਰੁ ਵਰਤਾਇਆ ॥
लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥
जब शिशु का जन्म हुआ तो उसकी परमेश्वर से लगन छूट गई और जीव सांसारिक इच्छाओं में आसक्त हो जाता है एवं माया अपना जाल बिछा देती है।

ਏਹ ਮਾਇਆ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਵਿਸਰੈ ਮੋਹੁ ਉਪਜੈ ਭਾਉ ਦੂਜਾ ਲਾਇਆ ॥
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥
यह माया ऐसी है, जिससे जीव परमात्मा को भूल जाता है, फिर उसके मन में मोह उत्पन्न हो जाता है और द्वैतभाव लग जाता है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨਾ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਤਿਨੀ ਵਿਚੇ ਮਾਇਆ ਪਾਇਆ ॥੨੯॥
कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥
भक्त नानक कहते हैं कि गुरु की कृपा से जिनकी ईश्वर में लगन लग गई है, उन्होंने माया में भी उसे प्राप्त कर लिया है॥ २६ ॥

ਹਰਿ ਆਪਿ ਅਮੁਲਕੁ ਹੈ ਮੁਲਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥
ईश्वर स्वयं अमूल्य है और उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਮੁਲਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ਕਿਸੈ ਵਿਟਹੁ ਰਹੇ ਲੋਕ ਵਿਲਲਾਇ ॥
मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥
किसी से भी उसका सही मूल्य आंका नहीं जा सकता, कितने ही लोग उसके लिए रोते तरसते हार गए हैं।

ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤਿਸ ਨੋ ਸਿਰੁ ਸਉਪੀਐ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਜਾਇ ॥
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥
यदि सतगुरु मिल जाए, तो उसे अपना सिर अर्पण कर देना चाहिए अर्थात् उसके समक्ष नतमस्तक हो जाना चाहिए जिससे मन का अहंकार दूर हो जाता है।

ਜਿਸ ਦਾ ਜੀਉ ਤਿਸੁ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥
जिसके यह दिए हुए प्राण हैं, यदि जीव उससे मिला रहे तो परमात्मा मन में स्थित हो जाता है।

ਹਰਿ ਆਪਿ ਅਮੁਲਕੁ ਹੈ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਕੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੩੦॥
हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥३०॥
हे नानक ! परमात्मा स्वयं अमूल्य है और वही भाग्यवान् है, जो उसे प्राप्त करता है॥ ३० ॥

ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥
हरि-नाम मेरा राशन है और मेरा मन व्यापारी हैं।

ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਰਾਸਿ ਜਾਣੀ ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥
मेरा मन व्यापारी और हरि-नाम मेरी जीवन-राशन है, इस राशन का ज्ञान मुझे सतगुरु से मिला है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਤ ਜਪਿਹੁ ਜੀਅਹੁ ਲਾਹਾ ਖਟਿਹੁ ਦਿਹਾੜੀ ॥
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥
दिल से नित्य हरि-नाम को जपते रहो और प्रतिदिन नाम-रूपी लाभ प्राप्त करो।

ਏਹੁ ਧਨੁ ਤਿਨਾ ਮਿਲਿਆ ਜਿਨ ਹਰਿ ਆਪੇ ਭਾਣਾ ॥
एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥
यह नाम-धन उन्हें ही मिला है, जिन्हें परमात्मा ने स्वयं अपनी इच्छा से दिया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਹੋਆ ਵਣਜਾਰਾ ॥੩੧॥
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥
भक्त नानक कहते हैं कि हरि-नाम मेरी जीवन-राशि है और मन व्यापारी बन गया है॥ ३१ ॥

ਏ ਰਸਨਾ ਤੂ ਅਨ ਰਸਿ ਰਾਚਿ ਰਹੀ ਤੇਰੀ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ॥
ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥
हे रसना ! तू अन्य रसों में लीन रहती है, पर तेरी प्यास नहीं बुझती।

ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ਹੋਰਤੁ ਕਿਤੈ ਜਿਚਰੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਲੈ ਨ ਪਾਇ ॥
पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥
किसी अन्य प्रकार से तेरी प्यास नहीं बुझ सकती, जब तक तू हरि-रस को प्राप्त करके उसका पान नहीं करती।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇ ਪਲੈ ਪੀਐ ਹਰਿ ਰਸੁ ਬਹੁੜਿ ਨ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ॥
हरि-रस को पा कर उसका पान कर ले, चूंकि हरि-रस का पान करने से दोबारा कोई तृष्णा नहीं लगेगी।

ਏਹੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਕਰਮੀ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਆਇ ॥
एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥
यह हरि-रस शुभ कर्मों से ही प्राप्त होता है, जिसे सतगुरु मिल जाता है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹੋਰਿ ਅਨ ਰਸ ਸਭਿ ਵੀਸਰੇ ਜਾ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੩੨॥
कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥३२॥
भक्त नानक कहते हैं कि जब परमात्मा मन में बस जाता है तो अन्य सभी रस भूल जाते हैं।॥३२॥

ਏ ਸਰੀਰਾ ਮੇਰਿਆ ਹਰਿ ਤੁਮ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਰਖੀ ਤਾ ਤੂ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥
ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥
हे मेरे शरीर ! जब परमेश्वर ने तुझ में ज्योति स्थापित की तो तू तब ही इस जगत् में आया।

ਹਰਿ ਜੋਤਿ ਰਖੀ ਤੁਧੁ ਵਿਚਿ ਤਾ ਤੂ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥
हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥
ईश्वर ने जब ज्योति स्थापित की तो ही तू जगत् में आया है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਮਾਤਾ ਆਪੇ ਪਿਤਾ ਜਿਨਿ ਜੀਉ ਉਪਾਇ ਜਗਤੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥
वह स्वयं ही सबके माता-पिता है, जिसने प्रत्येक जीव को पैदा करके यह जगत् दिखाया है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝਿਆ ਤਾ ਚਲਤੁ ਹੋਆ ਚਲਤੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥
गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥
गुरु की कृपा से समझा तो यह चमत्कार हुआ कि यह जगत् चमत्कारी ही नज़र आया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਾ ਮੂਲੁ ਰਚਿਆ ਜੋਤਿ ਰਾਖੀ ਤਾ ਤੂ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥੩੩॥
कहै नानकु स्रिसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥३३॥
भक्त नानक कहते हैं कि जब परमात्मा ने सृष्टि का मूल रचा तो उसने तुझ में अपनी ज्योति स्थापित की और तब ही तू इस जगत् में आया है॥ ३३॥

ਮਨਿ ਚਾਉ ਭਇਆ ਪ੍ਰਭ ਆਗਮੁ ਸੁਣਿਆ ॥
मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥
प्रभु के आगमन की सूचना सुनकर मन में बड़ी उमंग (चाव) उत्पन्न हो गयी है।

ਹਰਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਉ ਸਖੀ ਗ੍ਰਿਹੁ ਮੰਦਰੁ ਬਣਿਆ ॥
हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥
हे मेरी सखी ! परमात्मा का मंगलगान करो, यह हृदय-घर पावन मन्दिर बन गया है।

ਹਰਿ ਗਾਉ ਮੰਗਲੁ ਨਿਤ ਸਖੀਏ ਸੋਗੁ ਦੂਖੁ ਨ ਵਿਆਪਏ ॥
हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥
हे सखी ! नित्य प्रभु का मंगलगान करने से कोई दुःख-दर्द एवं चिंता नहीं लगती।

ਗੁਰ ਚਰਨ ਲਾਗੇ ਦਿਨ ਸਭਾਗੇ ਆਪਣਾ ਪਿਰੁ ਜਾਪਏ ॥
गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥
वह दिन भाग्यशाली है, जब गुरु-चरणों में मन लग जाता है और प्रिय-प्रभु की अनुभूति होती है।

ਅਨਹਤ ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਾਣੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਭੋਗੋ ॥
अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥
गुरु के शब्द से अनहद वाणी की जानकारी मिली है, हरि-नाम जपो एवं हरि-रस का पान करते रहो।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਮਿਲਿਆ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਜੋਗੋ ॥੩੪॥
कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥
भक्त नानक कहते हैं कि सब करने-करवाने में समर्थ प्रभु स्वयं ही आ मिले हैं।॥ ३४॥

ਏ ਸਰੀਰਾ ਮੇਰਿਆ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇ ਕੈ ਕਿਆ ਤੁਧੁ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ॥
ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥
हे मेरे शरीर ! इस जगत् में आकर तूने कौन-सा शुभ कर्म किया है ?

ਕਿ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ਤੁਧੁ ਸਰੀਰਾ ਜਾ ਤੂ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥
कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥
हे शरीर ! इस जगत् में आकर तूने क्या कर्म किया है ?

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਤੇਰਾ ਰਚਨੁ ਰਚਿਆ ਸੋ ਹਰਿ ਮਨਿ ਨ ਵਸਾਇਆ ॥
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥
जिस परमात्मा ने तेरी रचना की है, उसे तो मन में ही नहीं बसाया।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਿਆ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ॥
गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥
गुरु की कृपा से ईश्वर उसके मन में ही बसा है, पूर्व कर्मों के कारण जिसे यह फल प्राप्त हुआ है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਏਹੁ ਸਰੀਰੁ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਆ ਜਿਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥੩੫॥
कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥३५॥
भक्त नानक कहते हैं कि जिसने सतगुरु में चित्त लगाया है, उसका यह शरीर सफल हो गया है॥३५॥

ਏ ਨੇਤ੍ਰਹੁ ਮੇਰਿਹੋ ਹਰਿ ਤੁਮ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਧਰੀ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦੇਖਹੁ ਕੋਈ ॥
ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥
हे मेरे नेत्रों ! परमात्मा ने तुझ में ज्योति स्थापित की है, इसलिए उसके अतिरिक्त किसी अन्य को मत देखो।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦੇਖਹੁ ਕੋਈ ਨਦਰੀ ਹਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥
हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥
प्रभु के अतिरिक्त किसी अन्य को मत देखो, क्योंकि उसकी कृपा से ही तुझे दृष्टि मिली है।

ਏਹੁ ਵਿਸੁ ਸੰਸਾਰੁ ਤੁਮ ਦੇਖਦੇ ਏਹੁ ਹਰਿ ਕਾ ਰੂਪੁ ਹੈ ਹਰਿ ਰੂਪੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥
एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥
यह जो विश्व-संसार तुम देख रहे हो, यह परमात्मा का रूप है और परमात्मा का ही रूप दिखाई दे रहा है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝਿਆ ਜਾ ਵੇਖਾ ਹਰਿ ਇਕੁ ਹੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥
गुरु की कृपा से यह रहस्य समझ में आ गया है, जिधर भी देखता हूँ, एक ईश्वर ही दिखाई देता है और उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਏਹਿ ਨੇਤ੍ਰ ਅੰਧ ਸੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਦਿਬ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਹੋਈ ॥੩੬॥
कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ॥३६॥
भक्त नानक कहते हैं कि यह नेत्र पहले आध्यात्मिक रूप से अन्धे थे परन्तु सतगुरु को मिलकर दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो गई है॥ ३६॥

ਏ ਸ੍ਰਵਣਹੁ ਮੇਰਿਹੋ ਸਾਚੈ ਸੁਨਣੈ ਨੋ ਪਠਾਏ ॥
ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥
हे मेरे कानो ! परमात्मा ने तुम्हें जगत् में सत्य सुनने के लिए भेजा है।

ਸਾਚੈ ਸੁਨਣੈ ਨੋ ਪਠਾਏ ਸਰੀਰਿ ਲਾਏ ਸੁਣਹੁ ਸਤਿ ਬਾਣੀ ॥
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥
सत्य सुनने के लिए प्रभु ने शरीर के साथ लगाकर दुनिया में भेजा है इसलिए सत्य की वाणी सुनो,

ਜਿਤੁ ਸੁਣੀ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਆ ਰਸਨਾ ਰਸਿ ਸਮਾਣੀ ॥
जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥
जिसे सुनने से मन-तन प्रफुल्लित हो जाता है और रसना हरि-रस में विलीन हो जाती है।

ਸਚੁ ਅਲਖ ਵਿਡਾਣੀ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਏ ॥
सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥
उस परम सत्य, अलक्ष्य एवं अद्भुत प्रभु की विचित्र गति अकथनीय है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸੁਣਹੁ ਪਵਿਤ੍ਰ ਹੋਵਹੁ ਸਾਚੈ ਸੁਨਣੈ ਨੋ ਪਠਾਏ ॥੩੭॥
कहै नानकु अम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥
भक्त नानक कहते हैं कि नामामृत को सुनो एवं पवित्र हो जाओ, परमेश्वर ने तुम्हें सत्य सुनने के लिए जगत् में भेजा है॥ ३७॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਗੁਫਾ ਅੰਦਰਿ ਰਖਿ ਕੈ ਵਾਜਾ ਪਵਣੁ ਵਜਾਇਆ ॥
हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥
परमेश्वर ने आत्मा को शरीर रूपी गुफ़ा में रखकर प्राणों का नाद बजाया है।

ਵਜਾਇਆ ਵਾਜਾ ਪਉਣ ਨਉ ਦੁਆਰੇ ਪਰਗਟੁ ਕੀਏ ਦਸਵਾ ਗੁਪਤੁ ਰਖਾਇਆ ॥
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥
उसने प्राणों का नाद बजाया अर्थात् जीवन साँसों का संचार किया, शरीर रूपी गुफ़ा के नौ द्वार- आँखें, कान, मुंह, नाक इत्यादि प्रगट किए और दसम द्वार को गुप्त रखा हुआ है।

ਗੁਰਦੁਆਰੈ ਲਾਇ ਭਾਵਨੀ ਇਕਨਾ ਦਸਵਾ ਦੁਆਰੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥
प्रभु ने गुरु में श्रद्धा लगाकर दसवां द्वार दिखा दिया है।

ਤਹ ਅਨੇਕ ਰੂਪ ਨਾਉ ਨਵ ਨਿਧਿ ਤਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਪਾਇਆ ॥
तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥
वहाँ दसवें द्वार में अनेक रूप एवं नौ निधियों वाले नाम का निवास है, जिसका रहस्य नहीं पाया जा सकता।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਪਿਆਰੈ ਜੀਉ ਗੁਫਾ ਅੰਦਰਿ ਰਖਿ ਕੈ ਵਾਜਾ ਪਵਣੁ ਵਜਾਇਆ ॥੩੮॥
कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥
भक्त नानक कहते हैं कि प्यारे प्रभु ने आत्मा को शरीर रूपी गुफ़ा में स्थित कर प्राणों का संचार किया है॥ ३८ ॥

ਏਹੁ ਸਾਚਾ ਸੋਹਿਲਾ ਸਾਚੈ ਘਰਿ ਗਾਵਹੁ ॥
एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥
परमात्मा का यह सच्चा कीर्तन सच्चे घर (सत्संगति) में बैठकर गान करो।

ਗਾਵਹੁ ਤ ਸੋਹਿਲਾ ਘਰਿ ਸਾਚੈ ਜਿਥੈ ਸਦਾ ਸਚੁ ਧਿਆਵਹੇ ॥
गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥
उस सच्चे घर (सत्संगति) में बैठकर सच्चा कीर्तिगान करो, जहाँ सदैव सत्य का ध्यान किया जाता है।

ਸਚੋ ਧਿਆਵਹਿ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨਾ ਬੁਝਾਵਹੇ ॥
सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥
हे ईश्वर ! जो आपको अच्छे लगते हैं और जिन गुरुमुखों को ज्ञान हो जाता है, वही परम-सत्य का ध्यान करते हैं।

ਇਹੁ ਸਚੁ ਸਭਨਾ ਕਾ ਖਸਮੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਸੋ ਜਨੁ ਪਾਵਹੇ ॥
इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥
यह परम सत्य सबका मालिक है, सत्य उसे ही प्राप्त होता है, जिसे वह स्वयं प्रदान करता है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਚੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਚੈ ਘਰਿ ਗਾਵਹੇ ॥੩੯॥
कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥
भक्त नानक कहते हैं कि सच्चे घर (सत्संगति) में बैठकर परम-सत्य का कीर्तिगान करते रहो ॥३६॥

ਅਨਦੁ ਸੁਣਹੁ ਵਡਭਾਗੀਹੋ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰੇ ॥
अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
हे भाग्यशालियों ! आप श्रद्धा से आनंद वाणी को सुनो, इसे सुनने से सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਉਤਰੇ ਸਗਲ ਵਿਸੂਰੇ ॥
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
जिसने परब्रह्म प्रभु को पा लिया है, उसके सभी दु:ख-दर्द दूर हो गए हैं।

ਦੂਖ ਰੋਗ ਸੰਤਾਪ ਉਤਰੇ ਸੁਣੀ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ॥
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
जिसने सच्ची वाणी सुनी है, उसके सब दु:ख रोग एवं संताप उतर गए हैं।

ਸੰਤ ਸਾਜਨ ਭਏ ਸਰਸੇ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਣੀ ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
जिन्होंने पूर्ण गुरु से इस वाणी को जान लिया है, वे सभी सज्जन संत प्रसन्न हो गए हैं।

ਸੁਣਤੇ ਪੁਨੀਤ ਕਹਤੇ ਪਵਿਤੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
इस वाणी को सुनने वाले पावन हो जाते हैं और इसे जपने वाले भी पवित्र हो जाते हैं। सतगुरु अपनी वाणी में व्यापक है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਚਰਣ ਲਾਗੇ ਵਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥੪੦॥੧॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥
भक्त नानक विनती करते हैं कि गुरु के चरणों में लगने से मन में अनहद ध्वनियों वाले नाद बज रहे हैं।॥ ४०॥ १॥

ਅਰਦਾਸ

प्रार्थना

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥
ईश्वर एक है। सारी विजय विलक्षण गुरु (भगवान्) की है।

ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ।
आदरणीय तलवार या कृपाण (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्) हमारी सहायता करें!

ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦||
दसवें गुरु द्वारा सुनाई गई आदरणीय तलवार की कविता ।

ਪ੍ਰਿਥਮ ਭਗੌਤੀ ਸਿਮਰਿ ਕੈ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਲਈਂ ਧਿਆਇ॥
पहले तलवार को याद करो (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्); फिर गुरु नानक को याद करें (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਫਿਰ ਅੰਗਦ ਗੁਰ ਤੇ ਅਮਰਦਾਸੁ ਰਾਮਦਾਸੈ ਹੋਈਂ ਸਹਾਇ॥
फ़िर श्री गुरु अंगद, श्री गुरु अमर दास और गुरु राम दास का स्मरण और ध्यान करो; वे हमारी मदद करें ! (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਅਰਜਨ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਨੋ ਸਿਮਰੌਂ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਰਾਇ॥
श्री गुरु अर्जन, गुरु हरगोबिंद और गुरु हर राय का स्मरण और ध्यान करो। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਧਿਆਈਐ ਜਿਸ ਡਿਠੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਜਾਇ॥
पूज्य गुरु हर कृष्ण का स्मरण और ध्यान करें, जिनके दर्शन मात्र से सारे कष्ट मिट जाते हैं। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਿਮਰਿਐ ਘਰ ਨਉ ਨਿਧਿ ਆਵੈ ਧਾਇ॥
गुरु तेग बहादुर को याद करें और फिर आध्यात्मिक धन के नौ स्रोत (धैर्य, क्षमा दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुधि, विद्या सत्य, अक्रोध) आपके घर में तेजी से आएंगे।

ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
हे प्रभु ! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਵਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ! ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
आदरणीय दसवें गुरु गोबिंद सिंह (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें) को याद करें। हे भगवान्! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦੀ ਜੋਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਪਾਠ ਦੀਦਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
आदरणीय गुरु ग्रंथ साहिब में निहित दस राजाओं के दिव्य प्रकाश पर विचार करें और ध्यान करें और अपने विचारों को गुरु ग्रंथ साहिब की दिव्य शिक्षाओं की ओर मोड़ें और आनंद प्राप्त करें; बोले वाहेगुरु!(विलक्षण गुरु)

ਪੰਜਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਚੌਹਾਂ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ, ਚਾਲ੍ਹੀਆਂ ਮੁਕਤਿਆਂ, ਹਠੀਆਂ ਜਪੀਆਂ, ਤਪੀਆਂ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨਾਮ ਜਪਿਆ, ਵੰਡ ਛਕਿਆ, ਦੇਗ ਚਲਾਈ, ਤੇਗ ਵਾਹੀ, ਦੇਖ ਕੇ ਅਣਡਿੱਠ ਕੀਤਾ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਸਚਿਆਰਿਆਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ, ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
पाँच प्यारे, (गुरु गोबिंद सिंह के)चार पुत्रों के कर्मों के बारे में सोचो; चालीस शहीदों में से; अदम्य दृढ़ संकल्प के बहादुर सिक्खों की; नाम के रंग में डूबे भक्तों की; उनमें से जो नाम में विलीन थे; उन्हें जिन्होंने नाम का स्मरण किया और साथ में भोजन किया; उन्हें जिन्होंने निःशुल्क रसोई शुरू की; उन्हें जिन्होंने अपनी तलवारें चलाईं (सत्य की रक्षा के लिए); दूसरों की कमियों को नज़रअंदाज करने वालों को; उपरोक्त सभी शुद्ध और वास्तव में समर्पित व्यक्ति थे; बोल वाहे गुरु!(विलक्षण गुरु)

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿੰਘਾਂ ਸਿੰਘਣੀਆਂ ਨੇ ਧਰਮ ਹੇਤ ਸੀਸ ਦਿੱਤੇ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਕਟਾਏ, ਖੋਪਰੀਆਂ ਲੁਹਾਈਆਂ, ਚਰਖੜੀਆਂ ਤੇ ਚੜੇ, ਆਰਿਆਂ ਨਾਲ ਚਿਰਾਏ ਗਏ, ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ, ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹਾਰਿਆ, ਸਿੱਖੀ ਕੇਸਾਂ ਸੁਆਸਾਂ ਨਾਲ ਨਿਬਾਹੀ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
उन वीर सिक्ख पुरुषों और स्त्रियों की अनुपम सेवा को सोचो और याद करो, जिन्होंने अपना सिर न्यौछावर कर दिए, किन्तु सिक्ख धर्म का समर्पण नहीं किया; जिन्होंने शरीर के एक-एक जोड़ के टुकड़े-टुकड़े कर लिए; जिन्होंने अपनी सिर की खाल निकलवा दी; जिन्हें बांधकर पहियों पर घुमाया जाता था और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते थे; जिन्हें आरी से काटा गया था; जिवित खालें उतारी गईं; जिन्होंने गुरुद्वारों की मर्यादा बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया; जिन्होंने अपने सिक्ख धर्म को नहीं छोड़ा; जिन्होंने अपना सिक्ख धर्म रखा और अपने लंबे केशों को आखिरी सांस तक सहेज कर रखा; बोल वाहे गुरु!

ਪੰਜਾਂ ਤਖਤਾਂ, ਸਰਬੱਤ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
अपने विचारों को सिक्ख धर्म के सभी सिंहासनों और सभी गुरुद्वारों की ओर केंद्रित करें; बोलो वाहे गुरु!

ਪ੍ਰਿਥਮੇ ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ, ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਿਤ ਆਵੇ, ਚਿੱਤ ਆਵਨ ਕਾ ਸਦਕਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੋਵੇ।
पहले तो सारे आदरणीय खालसा यह दुआ करते हैं कि वे आपके नाम का ध्यान करें; और इस तरह के ध्यान के माध्यम से सभी सुख और आराम मिलें।

ਜਹਾਂ ਜਹਾਂ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਸਾਹਿਬ, ਤਹਾਂ ਤਹਾਂ ਰਛਿਆ ਰਿਆਇਤ, ਦੇਗ ਤੇਗ ਫ਼ਤਹਿ, ਬਿਰਦ ਕੀ ਪੈਜ, ਪੰਥ ਕੀ ਜੀਤ, ਸ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਹਾਇ, ਖਾਲਸੇ ਜੀ ਕੇ ਬੋਲ ਬਾਲੇ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
जहाँ भी आदरणीय खालसा उपस्थित हों, अपनी सुरक्षा और कृपा प्रदान करें; नि:शुल्क रसोई और तलवार कभी विफल न हो; अपने भक्तों का मान बनाए रखना; सिक्ख लोगों को विजय दिलाओ; सम्मानित तलवार हमेशा हमारी सहायता के लिए आए; खालसा का सदा सम्मान हो ; बोले वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੀ ਦਾਨ, ਕੇਸ ਦਾਨ, ਰਹਿਤ ਦਾਨ, ਬਿਬੇਕ ਦਾਨ, ਵਿਸਾਹ ਦਾਨ, ਭਰੋਸਾ ਦਾਨ, ਦਾਨਾਂ ਸਿਰ ਦਾਨ, ਨਾਮ ਦਾਨ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੇ ਇਸ਼ਨਾਨ, ਚੌਂਕੀਆਂ, ਝੰਡੇ, ਬੁੰਗੇ, ਜੁਗੋ ਜੁਗ ਅਟੱਲ, ਧਰਮ ਕਾ ਜੈਕਾਰ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ! !
सिक्खों को सिक्ख धर्म का दान, लंबे केशों का दान, सिक्ख धर्म का दान, दिव्य ज्ञान का दान, दृढ़ विश्वास का दान, विश्वास का दान और नाम का सबसे बड़ा उपहार प्रदान करें। हे प्रभु ! राग-रागी, हवेली और झंडे हमेशा के लिए स्थित रहें; सत्य की हमेशा विजय हो; बोलो वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਮਨ ਨੀਵਾਂ, ਮਤ ਉੱਚੀ ਮਤ ਦਾ ਰਾਖਾ ਆਪ ਵਾਹਿਗੁਰੂ।
सभी सिक्खों का मन विनम्र रहे और उनका ज्ञान ऊंचा रहे; हे प्रभु ! आप ज्ञान के रक्षक हैं।

ਹੇ ਨਿਮਾਣਿਆਂ ਦੇ ਮਾਣ, ਨਿਤਾਣਿਆਂ ਦੇ ਤਾਣ, ਨਿਓਟਿਆਂ ਦੀ ਓਟ, ਸੱਚੇ ਪਿਤਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ਆਪ ਦੇ ਹਜ਼ੂਰ.....ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ।
हे सच्चे पातशाह, वाहे गुरु! आप नम्र लोगों के मान हैं, असहायों की शक्ति हैं, आश्रयहीनों के आश्रय हैं, हम विनम्रतापूर्वक आपकी उपस्थिति में प्रार्थना करते हैं... .. (यहाँ किए गए अवसर या प्रार्थना को प्रतिस्थापित करें) ।

ਅੱਖਰ ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕ ਮਾਫ ਕਰਨੀ। ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸ ਕਰਨੇ।

कृपया उपरोक्त प्रार्थना को पढ़ने में हमारे दोषों और कमियों को क्षमा करें। कृपया सभी के उद्देश्यों को पूरा करें।

ਸੇਈ ਪਿਆਰੇ ਮੇਲ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਿਲਿਆਂ ਤੇਰਾ ਨ ਚਿੱਤਆਵੇ। ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚੜ੍ਹਦੀ ਕਲਾ, ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ।

हमें उन सच्चे भक्तों से मिलाने की कृपा करें जिनसे हम आपके नाम का स्मरण और ध्यान कर सकें। हे परमेश्वर! सच्चे गुरु नानक के माध्यम से, आपका नाम ऊँचा हो सकता है, और आपकी इच्छा के अनुसार सभी समृद्ध हो सकते हैं।

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖ਼ਾਲਸਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ।

खालसा भगवान् का है; सभी विजय भगवान् की विजय है।

आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें

अपनी आध्यात्मिक यात्रा को उन्नत करने और जीवन में गहन अर्थ खोजने के लिए प्रथाओं की खोज करें।

यात्रा के लिए सिख धर्म के तीन मूलभूत सिद्धांत :

नाम जपना : ईश्वर का स्मरण

किरत करनी : ईमानदारी से काम करो

वंड छकना : दूसरों के साथ साझा करना

ये हमारा आध्यात्मिक मुक्ति और एक न्यायपूर्ण समाज की ओर अग्रसर करते हैं । गुरु ग्रंथ साहिब में निहित ये सिद्धांत सिख जीवन का आधार हैं।

चौथे गुरु रामदास जी के दैनिक अभ्यास के लिए ज्ञान : गुरु ग्रंथ साहिब (पृष्ठ 305-306) में, उन्होंने एक सिक्ख की दैनिक आध्यात्मिक यात्रा के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की है:

1. **दिन का प्रथम कार्य:** गुरु का सच्चा शिष्य प्रत्येक दिन का प्रारम्भ प्रेमपूर्वक ईश्वर का स्मरण करके करता है।

2. **शरीर और मन को शुद्ध करें:** सुबह जल्दी उठें, स्नान करें और ईश्वर के स्मरण में डूब जाएं, ऐसा महसूस करें कि आपकी आत्मा दिव्य अमृत में नहा रही है।

3. **स्मरण के माध्यम से मुक्ति:** गुरु की शिक्षाओं का पालन करने और भक्ति के साथ ईश्वर के नाम का स्मरण करने से सांसारिक आसक्तियों के कारण उत्पन्न दुःख और आंतरिक अशांति दूर हो जाती है।

4. **गाएँ और चिंतन करें:** निरंतर दिव्य स्तुति गाएं और अपने दैनिक कार्यों में दिव्य नाम का चिंतन करें।

5. **शांति का प्रकाश स्तम्भ बनें:** गुरु का अनुयायी जो हर सांस के साथ ईश्वरीय के नाम का प्रेमपूर्वक स्मरण करता है, वह एक शांत और प्रेरणादायक आत्मा बन जाती है।

6. **दिव्य ज्ञान प्राप्त करें:** गुरु यह दिव्य ज्ञान उन लोगों को प्रदान करते हैं जिन्होंने उनकी कृपा अर्जित की है।

7. **दूसरों को प्रेरित करें:** गुरु नानक उस शिष्य को नमन करते हैं जो न केवल ईश्वरीय

नाम का स्मरण करता है बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है।

8. **दुर्लभ एवं बहुमूल्य आत्माएं:** सच्चे रूप से समर्पित व्यक्ति दुर्लभ होते हैं, फिर भी ईश्वर के प्रति उनके स्मरण से असंख्य अन्य लोगों को आध्यात्मिक रूप से लाभ होता है।

9. **नकारात्मकता से बचें:** उन लोगों से दूरी बनाए रखें जो गुरु की शिक्षाओं की अवहेलना करते हैं और आध्यात्मिक अज्ञानता के चक्र में फँसे रहते हैं। उन लोगों से सावधान रहें जो आपके सामने मीठी-मीठी बातें करते हैं, लेकिन पीठ पीछे नकारात्मकता फैलाते हैं।

यात्रा के लिए दर्शन

सिक्ख धर्म के दर्शनशास्त्र की विशेषता आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया के लिए तर्क, व्यापकता और "तामझाम रहित" दृष्टिकोण है। इसका धर्मशास्त्र सादगी द्वारा चिह्नित है। सिक्ख नैतिकता में व्यक्ति के स्वयं के प्रति कर्त्तव्य और समाज (संगत) के प्रति कर्त्तव्य के बीच कोई संघर्ष नहीं है।

सिक्ख धर्म लगभग 500 साल पहले गुरु नानक द्वारा स्थापित सबसे कम उम्र का विश्व धर्म है। यह ब्रह्मांड के एक सर्वोच्च अस्तित्व और निर्माता (वाहेगुरु) में विश्वास पर बल देता है। यह शाश्वत आनंद के लिए एक सरल सीधा मार्ग प्रदान करता है और प्रेम और विश्वव्यापी भाईचारे का संदेश फैलाता है। सिक्ख धर्म दृढ़ता से एक एकेश्वरवादी विश्वास है और भगवान् को एकमात्र ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानता है जो समय या स्थान की सीमाओं के अधीन नहीं है।

सिक्ख धर्म का मानना है कि ईश्वर केवल एक ही है, जो निर्माता, निर्वाहक, विनाशक है और मानव रूप नहीं लेता है। सिक्ख धर्म में अवतार के सिद्धांत का कोई स्थान नहीं है। यह देवी-देवताओं और अन्य देवी-देवताओं को कोई मूल्य नहीं देता है।

सिक्ख धर्म में नैतिकता और धर्म एक साथ चलते हैं। आध्यात्मिक विकास की दिशा में क़दम बढ़ाने के लिए व्यक्ति को दैनिक जीवन में नैतिक गुणों को अपने मन में धारण करना चाहिए और सद्गुणों का अभ्यास करना चाहिए। ईमानदारी, करुणा, उदारता, धैर्य और विनम्रता जैसे गुणों को केवल प्रयासों और मन की दृढ़ता से ही विकसित किया जा सकता है। हमारे महान गुरुओं का जीवन इस दिशा में प्रेरणा का स्रोत है।

सिक्ख धर्म सिखाता है कि मानव जीवन का लक्ष्य जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ना और ईश्वर में विलीन होना है। यह गुरु की शिक्षाओं का पालन, पवित्र नाम (नाम) पर ध्यान और सेवा और दान के कार्यों के संपादन से पूरा किया जा सकता है।

नाम मार्ग भगवान् के स्मरण के लिए दैनिक भक्ति पर बल देता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए पांच भावनाओं, अर्थात, काम (इच्छा), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (सांसारिक लगाव) और अहंकार (अभिमान) को नियंत्रित करना होगा। संघ अनुष्ठान और नियमित प्रथाओं जैसे उपवास और तीर्थयात्रा, शकुन और तपस्या को सिक्ख धर्म में अस्वीकार कर दिया गया है। मानव जीवन का लक्ष्य भगवान् के साथ विलीन होना है और यह गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का पालन करके पूरा किया जाता है। सिक्ख धर्म भक्ति मार्ग या निष्ठा मार्ग पर बल देता है। यद्यपि, यह ज्ञान मार्ग (ज्ञान का मार्ग) और कर्म मार्ग (कार्य का मार्ग) के महत्व को पहचानता है। यह आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ईश्वर की कृपा अर्जित करने की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल देता है।

सिक्ख धर्म एक आधुनिक, तार्किक और व्यावहारिक धर्म है। यह मानता है कि सामान्य पारिवारिक जीवन (गृहस्थ) मोक्ष के लिए कोई बाधा नहीं है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य या संसार का त्याग आवश्यक नहीं है। सांसारिक व्याधियों और प्रलोभनों के बीच अलग रहना संभव है। एक भक्त को संसार में रहना चाहिए और फिर भी अपने सिर को सामान्य तनाव और प्रलोभनों से स्वयं को दूर रखना चाहिए। वह एक विद्वान सैनिक और भगवान् के लिए संत होना चाहिए।

सिक्ख धर्म समस्त संसार का एक "धर्मनिरपेक्ष धर्म" है और इस प्रकार जाति, संप्रदाय, वंश या लिंग के आधार पर सभी भेदों को अमान्य करता है। यह मानता है कि सभी मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में समान हैं। गुरुओं ने महिलाओं की समानता पर बल दिया और कन्या भ्रूण हत्या और सती प्रथा को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का भी सक्रिय रूप से प्रचार किया और पर्दा प्रथा (महिलाओं का पर्दा पहनने) को अस्वीकार कर दिया। मन को ईश्वर पर केंद्रित करने के लिए व्यक्ति को पवित्र नाम (नाम) का ध्यान करना चाहिए और सेवा और दान के कार्यों को करना चाहिए। ईमानदारी से काम करके (किरत करना) अपनी आजीविका अर्जित करना सम्माननीय माना जाता है, न कि भीख मांग कर या बेईमानी से । वंद छकना, दूसरों के साथ साझा करना भी एक सामाजिक जिम्मेदारी है। व्यक्ति से जरूरतमंद लोगों की मदद, दसवंध (अपनी कमाई का 10%) के माध्यम से करने की उम्मीद की जाती है। सेवा, सामुदायिक सेवा भी सिक्ख धर्म का अभिन्न अंग है। सभी धर्मों के लोगों के लिए खुली हर गुरुद्वारे में मिलने वाली निःशुल्क सामुदायिक रसोई (लंगर) इस सामुदायिक सेवा की एक अभिव्यक्ति है।

सिक्ख धर्म आशावाद और आशा की वकालत करता है। यह निराशावाद की विचारधारा को स्वीकार नहीं करता है।

गुरुओं का मानना था कि इस जीवन का उद्देश्य और एक लक्ष्य है। यह आत्मज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा मनुष्य अपने कार्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। वह अपने कार्यों के परिणामों से प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। इसलिए वह जो करता है उसमें बहुत सतर्क रहना चाहिए।

सिक्ख ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब, शाश्वत गुरु हैं। यह एकमात्र धर्म है जिसने पवित्र पुस्तक को एक धार्मिक गुरु का पद दिया है। सिक्ख धर्म में जीवित मानव गुरु (देहधारी) के लिए कोई स्थान नहीं है।

महिलाओं की भूमिका

सिक्ख धर्म के सिद्धांतों में कहा गया है कि महिलाओं के पास पुरुषों के समान ही आत्माएं हैं और उनकी आध्यात्मिकता को विकसित करने का समान अधिकार है। वे धार्मिक सभाओं का नेतृत्व कर सकती हैं, अखंड पथ (पवित्र शास्त्रों का निरंतर पाठ) में भाग ले सकती हैं, कीर्तन (भजनों का सामूहिक गायन) कर सकती हैं, ग्रन्थियों (पुजारियों) के रूप में काम कर सकती हैं। वे सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। सिक्ख धर्म पुरुषों और महिलाओं को समानता देने वाला पहला प्रमुख विश्व धर्म था। गुरु नानक ने लिंग आधारित समानता का उपदेश दिया, और उनके बाद आने वाले गुरुओं ने महिलाओं को सिक्ख पूजा और अभ्यास की सभी गतिविधियों में पूर्ण भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"महिला और पुरुष, सभी भगवान् द्वारा बनाए गए हैं। यह सब भगवान् का खेल है। नानक कहते हैं, तेरी सारी रचना अच्छी और पवित्र है" -गुरु ग्रंथ पृष्ठ 304

सिक्ख इतिहास ने पुरुषों की सेवा, भक्ति, बलिदान और बहादुरी में महिलाओं की भूमिका को समान रूप से चित्रित किया है। सिक्ख परंपरा में महिलाओं की नैतिक गरिमा, सेवा और आत्म-बलिदान के कई उदाहरण लिखे गए हैं।

सिक्ख धर्म के अनुसार पुरुष और महिला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अंतर्संबंधों और अन्योन्याश्रय की व्यवस्था में जहाँ पुरुष स्त्री से जन्म लेता है, और स्त्री पुरुष के बीज से पैदा होती है। सिक्ख धर्म के अनुसार एक पुरुष एक महिला के बिना अपने जीवन में सुरक्षित और पूर्ण महसूस नहीं कर सकता है, और एक पुरुष की सफलता उस महिला के प्यार और समर्थन से संबंधित है जो उसके साथ अपना जीवन साझा करती है, और इसके विपरीत। गुरु नानक ने कहा: "[यह] एक महिला है जो दौड़ को जारी रखती है" और हमें "महिला को शापित और निंदित नहीं समझना चाहिए, [जब] महिला से नेता और राजा पैदा होते हैं।" SGGS पृष्ठ 473.

उद्धार: उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि क्या कोई धर्म महिलाओं को मोक्ष प्राप्त करने, भगवान् की प्राप्ति या उच्चतम आध्यात्मिक क्षेत्र प्राप्त करने में सक्षम मानता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है," सभी प्राणियों में ईश्वर व्यापक हैं, ईश्वर सभी रूपों में पुरुष और महिलामें व्यापत हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 605)।

गुरु ग्रंथ साहिब के उपरोक्त कथन के अनुसार, ईश्वर का प्रकाश दोनों लिंगों के साथ समान रूप से रहता है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों गुरु की शिक्षाओं का पालन करके समान रूप से मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। कई धर्मों में स्त्री को पुरुष की आध्यात्मिकता में बाधक माना जाता है,किन्तु सिक्ख धर्म में नहीं। गुरु ने इसे अस्वीकार कर दिया। 'सिक्ख धर्म पर वर्तमान विचार' में,

ऐलिस बसरके कहते हैं, "पहले गुरु ने महिला को पुरुष के बराबर रखा ... महिला पुरुष के लिए बाधा नहीं थी, लेकिन भगवान् की सेवा करने और मोक्ष की तलाश में एक भागीदार थी"।

विवाह: गुरु नानक देव ने गृहस्थ की संस्तुत की - एक गृहस्थ का जीवन, ब्रह्मचर्य और त्याग के स्थान पर, पति और पत्नी समान भागीदार थे और दोनों को स्वामीभक्ति की आज्ञा दी गई थी। पवित्र छंदों में, घरेलू सुख को एक पोषित आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है और विवाह ने ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए एक निरंतर रूपक प्रदान किया है। भाई गुरदास, प्रारंभिक सिक्ख धर्म के कवि और सिख सिद्धांत के एक आधिकारिक व्याख्याकार, महिलाओं को उच्च सम्मान देते हैं। वे कहते हैं:

"एक महिला, अपने माता-पिता के घर में प्रिय होती है, जिसे उसके पिता और माता बहुत प्यार करते हैं। अपने ससुराल में, वह परिवार का स्तंभ होती है, उनके अच्छे भाग्य की दायित्व होती है... आध्यात्मिक ज्ञान एवं मोक्ष में भागीदार और महान गुणों से संपन्न, एक महिला, पुरुष का आधा हिस्सा, उसे मुक्ति के द्वार तक ले जाती है। (वारन, वि. 16)

समान स्थिति: पुरुषों और महिलाओं के बीच समान स्थिति सुनिश्चित करने के लिए, गुरुओं ने दीक्षा, निर्देश या संगत (पवित्र फेलोशिप) और पंगत (एक साथ भोजन करना) गतिविधियों में लिंग के बीच कोई अंतर नहीं किया। सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश के अनुसार, गुरु अमर दास ने महिलाओं द्वारा घूंघट के प्रयोग का विरोध किया। उन्होंने शिष्यों में महिलाओं को कुछ समुदायों की निगरानी के लिए नियुक्त किया और सती प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया। सिक्ख इतिहास में कई महिलाओं के नाम दर्ज हैं, जैसे माता गुजरी माई भागो, माता सुंदरी, रानी साहिब कौर, रानी सदा कौर और महारानी जींद कौर, जिन्होंने अपने समय की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा: सिक्ख धर्म में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह किसी की भी सफलता की कुंजी है। यह व्यक्तिगत विकास की एक प्रक्रिया है और यही कारण है कि तीसरे गुरु ने कई विद्यालयों की स्थापना की। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"सभी दिव्य ज्ञान और चिंतन गुरु के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 831) ।

सभी के लिए शिक्षा आवश्यक है और सभी को सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए काम करना चाहिए। तीसरे गुरु द्वारा भेजे गए सिक्ख मिशनरियों में से बावन महिलाएँ थीं। 'सिक्ख महिलाओं की भूमिका और स्थिति में, डॉ मोहिंदर कौर गिल लिखती हैं, **"गुरु अमर दास को विश्वास था कि कोई भी शिक्षा तब तक जड़ नहीं ले सकती जब तक कि उन्हें महिलाओं द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।"**

कपड़ों पर प्रतिबंध: महिलाओं को घूंघट न पहनने की आवश्यकता के अतिरिक्त, सिक्ख धर्म परिधान संहिता के संबंध में एक सरल लेकिन बहुत महत्वपूर्ण वर्णन करता है। यह लिंग की परवाह किए बिना सभी सिखों पर लागू होता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"उन कपड़ों को पहनने से बचें, जिनमें शरीर असहज हो और मन बुरे विचारों से भरा हो।" एसजीजीएस, पृष्ठ 16

इस प्रकार, सिक्खों को एहसास होगा कि किस प्रकार के कपड़े दिमाग को बुरे विचारों से भर देते हैं और उन्हें इससे बचना चाहिए। सिक्ख महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे कृपाण (तलवार) और अन्य के साथ अपनी रक्षा करें, यह महिलाओं के लिए अद्वितीय है क्योंकि यह इतिहास में पहली बार है जब महिलाओं से अपनी रक्षा करने की उम्मीद की गई थी और उनसे शारीरिक सुरक्षा के लिए पुरुषों पर निर्भर होने की उम्मीद नहीं की गई थी।

SGGS उद्धरण: गुरु नानक जी का कथन है कि, "पृथ्वी और आकाश में, मुझे कोई दूसरा दिखाई नहीं देता। सभी महिलाओं और पुरुषों के बीच, उसका प्रकाश चमक रहा है।" Sggs पृष्ठ 223। स्त्री से, पुरुष का जन्म होता है; स्त्री के भीतर पुरुष की कल्पना की जाती है; महिला से उसकी सगाई और शादी हो चुकी है। महिला उसकी दोस्त बन जाती है; नारी के माध्यम से भावी पीढ़ियां जन्म लेती हैं। जब उसकी स्त्री मर जाती है, तो वह दूसरी स्त्री की तलाश करता है; स्त्री के लिए वह बाध्य है। तो उसे बुरा क्यों कहते हो? उसी से राजा उत्पन्न होते हैं। स्त्री से स्त्री का जन्म होता है; स्त्री के बिना, कोई भी नहीं होगा। एसजीजीएस पृष्ठ 473

दहेज के संबंध में: "हे मेरे प्रभु, मुझे अपना नाम मेरी शादी के उपहार और दहेज के रूप में दें।" श्री गुरु राम दास जी, पृष्ठ 78, एसजीजीएस की पंक्ति 18

पर्दा प्रथा के विषय में: "रुको, ठहरो, ओ वधु - अपना चेहरा घूंघट से मत ढ़को। अंत में, यह तुम्हें आधा आवरण भी नहीं देगा।" तुमसे पूर्व जो चेहरे पर पर्दा किया करती थी, उनके पदचिन्हों पर मत चलना। अपने चेहरे पर पर्दा करने का एकमात्र गुण यह है कि कुछ दिनों के लिए लोग कहेंगे कि, "क्या गुणी दुल्हन आई है"। तुम्हारा यह घूंघट तभी सत्य हो जाएगा है, जब तुम भगवान् की महिमा को छोड़ते, नाचते और गाते हैं। -पृष्ठ 484, SGGS

महिलाएँ और वास्तव में सभी आत्माओं को आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित किया गया था: "आओ, मेरी प्यारी बहनों और आध्यात्मिक साथियों; मुझे अपने आलिंगन में कसकर गले लगाओ। आओ एक साथ जुड़ें, और अपने सर्वशक्तिमान पति भगवान् की कहानियां सुनाएं।" - गुरु नानक, एसजीजीएस पृष्ठ 17, ।

"मित्र, अन्य सभी वस्त्र सुख को नष्ट कर देते हैं, अंगों पर जो पहना जाता है वह पीड़ा देते हैं और गलत सोच से मन को भर जाता है" - SGGS पृष्ठ 16

पगड़ी का महत्व

पगड़ी हमेशा एक सिक्ख का एक अभिन्न अंग रही है। लगभग 1500 A.D और सिक्ख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक के समय से, सिक्ख पगड़ी पहनते आ रहे हैं।

पगड़ी या "पगरी" को प्रायः "पग" या "दस्तार" के रूप में छोटा किया जाता है, एक ही वस्त्र के लिए विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग शब्द हैं। ये सभी शब्द पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपने सिर को ढंकने के लिए पहने जाने वाले परिधान को संदर्भित करते हैं। यह एक लंबे दुपट्टे की तरह कपड़े का एक टुकड़ा होता है जो सिर के चारों ओर लपेटा जाता है या कभी-कभी एक आंतरिक "टोपी" या पटका होता है। परंपरागत रूप से भारत में, पगड़ी केवल समाज में उच्च स्थिति के पुरुषों द्वारा पहनी जाती थी; निम्न स्थिति या निम्न जातियों के पुरुषों को पगड़ी पहनने की अनुमति नहीं थी।

हालांकि गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा बिना कटे बालों को रखना अनिवार्य था, जो कि पांच के या विश्वास के पांच लेखों में से एक था, यह लंबे समय से 1469 में सिक्ख धर्म की शुरुआत से ही सिक्ख धर्म से जुड़ा हुआ है। सिक्ख धर्म दुनिया में एकमात्र धर्म है। जिसमें सभी वयस्क पुरुषों के लिए पगड़ी पहनना अनिवार्य है। पश्चिमी देशों में पगड़ी पहनने वाले अधिकांश लोग सिक्ख हैं। सिक्ख पगड़ी को दस्तार भी कहा जाता है। 'दस्तार' फारसी शब्द है। इसका अर्थ है 'हैंड ऑफ गॉड' जिसका अर्थ है उनका आशीर्वाद।

सिक्ख अपनी कई और विशिष्ट पगड़ियों के लिए प्रसिद्ध हैं। परंपरागत रूप से, पगड़ी सम्मान का प्रतिनिधित्व करती है, और लंबे समय से केवल बड़प्पन के लिए आरक्षित एक वस्तु रही है। भारत के मुगल शासन के काल में, केवल मुसलमानों को पगड़ी पहनने की अनुमति थी। सभी गैर-मुस्लिमों को एक पगड़ी पहनने से दृढ़ता से रोक दिया गया था।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने मुगलों द्वारा इस चुनौति की अवहेलना करते हुए अपने सभी सिक्खों को पगड़ी पहनने के लिए कहा। यह उच्च नैतिक मानकों की मान्यता में पहना जाना था, जिसे उन्होंने अपने खालसा अनुयायियों के लिए तैयार किया था। वह चाहते थे कि उनका खालसा विशिष्ट हो और "शेष संसार से अलग दिखने" के लिए दृढ़ संकल्पित हो। वह चाहते थे कि वे सिक्ख गुरुओं द्वारा निर्धारित अद्वितीय मार्ग का अनुसरण करें। इस प्रकार, एक पगड़ीधारी सिक्ख हमेशा भीड़ से अलग खड़ा होता है, जैसा कि गुरु का इरादा था; क्योंकि वह चाहते थे कि उनके 'संत-सैनिक' न केवल आसानी से पहचाने जा सकें, बल्कि आसानी से मिल भी जाएँ।

जब एक सिक्ख पुरुष या महिला पगड़ी पहनती है, तो पगड़ी केवल कपड़े का एक फीता नहीं रह जाती है; क्योंकि यह सिक्ख के सिर के साथ एक ही हो जाती है। पगड़ी साथ ही सिक्खों द्वारा पहनी जाने वाली आस्था की चार अन्य वस्तुओं का अत्यधिक आध्यात्मिक और लौकिक महत्व है। जबकि पगड़ी पहनने से जुड़े कई प्रतीक हैं - स्वतंत्रता, समर्पण, स्वाभिमान, साहस और धर्मपरायणता, लेकिन!, सिक्खों द्वारा पगड़ी पहनने का मुख्य कारण उनके संस्थापक के लिए उनका प्यार, आज्ञाकारिता और सम्मान दिखाना है। खालसा गुरु गोबिंद सिंह।

उपरोक्त मुख्य अंश में कथित शब्दों को किसी और से बदलने की आवश्यकता है। 'इसका कारण' हो सकता है

"पगड़ी हमारे लिए हमारे गुरु का उपहार है। इस तरह हम स्वयं को सिंह और कौर के रूप में ताज पहनाते हैं जो हमारी अपनी उच्च चेतना के प्रति प्रतिबद्धता को सिंहासन पर बिठाती है। पुरुषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से, यह अनुमानित पहचान स्वत्व, सभ्यता और विशिष्टता व्यक्त करती है। । यह दूसरों के लिए एक संकेत है कि हम अनंत की छवि में रहते हैं और सभी की सेवा करने के लिए समर्पित हैं। पगड़ी पूरी प्रतिबद्धता के अलावा किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। जब आप अपनी पगड़ी बांधकर सबसे अलग दिखना चुनते हैं, तो आप निडर होकर एक अकेले के रूप में खड़े होते हैं। छह अरब लोगों से अलग खड़ा व्यक्ति। यह सबसे उत्कृष्ट कार्य है।" (सिक्खनेट से उद्धृत)

विनम्रता आपकी यात्रा का मुख्य सार है

विनम्रता सिक्ख धर्म का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। इसके अनुसार सिक्खों को ईश्वर के सामने विनम्रतापूर्वक झुकना चाहिए। विनम्रता या नम्रता, पंजाबी में निकटवर्ती शब्द हैं। नम्रता एक गुण है जिसका गुरबाणी में उत्साहपूर्वक प्रचार किया जाता है। इस पंजाबी शब्द का अनुवाद "नम्रता", "उदारता" या "विनम्रता" है। ऐसा मनुष्य जिसका मन इस विचार से विचलित नहीं होता है कि वह किसी से बेहतर या अधिक महत्वपूर्ण है।

समस्या क्षेत्र - उपरोक्त वाक्य सही नहीं है उपरोक्त वाक्य पूर्ण नहीं है

यह सभी मनुष्यों के पोषण के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है और एक सिक्ख की मानसिकता का एक अनिवार्य हिस्सा है और यह गुण हर समय सिक्ख के साथ होना चाहिए। सिक्ख शस्त्रागृह में अन्य चार गुण हैं : सत्य (सत), संतोष (संतोख), करुणा (दया) और प्रेम (प्यार) है।

एक सिक्ख के लिए ये पाँच गुण आवश्यक हैं और इन गुणों को आत्मसात करने और उन्हें अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाने के लिए गुरबाणी का ध्यान और पाठ करना उनका कर्त्तव्य है।

गुरबाणी हमें क्या बताती है:

"विनम्रता का फल सहज ज्ञान से प्राप्त शांति और आनंद है। विनम्रता के साथ वे उत्कृष्टता का खजाना ईश्वर का ध्यान करना जारी रखते हैं। ईश्वर से अभिज्ञ प्राणी विनम्रता में डूबा हुआ है। जिसका हृदय दयापूर्वक विनम्रता के साथ स्थिर है। सिक्ख धर्म विनम्रता को ईश्वर के समक्ष भिक्षा पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

गुरु नानक, सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु :

"अपने मन में प्यार और विनम्रता के साथ सुनना और विश्वास करना, अपने भीतर गहरे पवित्र मंदिर में स्वयं को ईश्वर के नाम से शुद्ध करें।"- SGGS पृष्ठ 4

"संतोष को अपने कान की बाली बना लो, विनम्रता को अपने भिक्षापात्र बना लो, और ध्यान को अपने शरीर पर ज़लगाने वाली भस्म बना लो।"- एसजीजीएस पृष्ठ 6।

"विनम्रता के क्षेत्र में, शब्द सौंदर्य है। वहाँ अतुलनीय सुंदरता के रूप बनाए जाते हैं।" SGGS पृष्ठ 8

"विनम्रता, उदारता और अंर्तज्ञान मेरी सास और ससुर हैं" -SGGS पृष्ठ 152।

आध्यात्मिकता की ओर यात्रा

गुरु ग्रंथ साहिब एक शाश्वत जीवित गुरु है, जो सिक्ख गुरुओं, हिंदू और मुस्लिम संतों की एक काव्य रचना है। यह संकलन उनके माध्यम से समस्त मानव जाति के लिए ईश्वर की ओर से एक उपहार है। गुरु ग्रंथ साहिब का दृष्टिकोण ईश्वरीय न्याय पर आधारित समाज का किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के बिना है। जबकि ग्रंथ हिंदू धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों को स्वीकार करता है और उनका सम्मान करता है, यह इनमें से किसी भी धर्म के साथ नैतिक सामंजस्य नहीं दर्शाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में महिलाओं को पुरुषों के बराबर की भूमिका के साथ बहुत सम्मान दिया जाता है। महिलाओं के पास पुरुषों के समान आत्माएं होती हैं और इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करने के समान अवसर के साथ आध्यात्मिकता के उच्च स्तर को प्राप्त करने का समान अधिकार होता है। महिलाएँ प्रमुख धार्मिक सभाओं सहित सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं।

सिक्ख धर्म समानता, सामाजिक न्याय, मानवता की सेवा और अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की वकालत करता है। सिक्ख धर्म का आवश्यक संदेश दैनिक जीवन में करुणा, ईमानदारी, विनम्रता और उदारता के आदर्शों का अभ्यास करते हुए हर समय आध्यात्मिक भक्ति और ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखना है। सिक्ख धर्म के तीन मूल सिद्धांत ध्यान और ईश्वर को याद करना, ईमानदारी से जीने के लिए काम करना और दूसरों के साथ साझा करना है।

आत्मा के लिए इस आध्यात्मिक यात्रा पर जाने का प्रयास करने के लिए बधाई। अनुवाद कभी भी मूल के करीब नहीं हो सकता, खासकर जब पूरा गुरु ग्रंथ साहिब कविता में हो और रूपकों का उपयोग कार्य को अत्यधिक कठिन बना देता है। दिव्य संदेश में, हिंदु, मुस्लिम पौराणिक कथाओं में प्राय: प्रह्लाद, हिरण्याक्ष, लक्ष्मी, ब्रह्मा आदि का प्रयोग किया जाता है। कृपया इन्हें अक्षरशः न पढ़ें बल्कि इनके अंतर्निहित संदेश को समझें। ध्यान इस तथ्य पर है कि ईश्वर एक है और उसके साथ मिलन ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

यह कार्य वर्षों से कई स्वयंसेवकों द्वारा किया गया है, ताकि आप तक आपकी भाषा में ईश्वरीय संदेश पहुँचाया जा सके। यदि आपका कोई प्रश्न हैं तो कृपया walnut@gmail.com पर बेझिझक ईमेल करें और हमें इस यात्रा में आपके साथ जुड़ना अच्छा लगेगा।